पद १२९

हेची देई। प्रीति जडो तुझिया निजपायां।।४।।

सत्संगत सद्गुरुची सेवा। निशिदिनी घडो मजलागीं देवा।।१।।

स्वधर्म घडो तो अधर्म नसावा। तूं सर्वांभूती ठसावा।।२।। षड्वैरीचा

संग नको रे। मन वैराग्य वनांत भकोरे।।३।। माणिक म्हणे प्रभु

देई मला इतुके रघुराया। मति उपजो तुझिया गुण गाया।।ध्रु.।।

(राग: यमन कल्याण - ताल: त्रिताल)